

No. of printed pages : 9

MTT-002

# **Post Graduate Certificate in Bangla-Hindi Translation Programme**

## **Term-End Examination**

June, 2022

# **MTT-002 : Bangali-Hindi translation : Comparison and Reconstruction**

### **Duration : 3 Hours**

Maximum Marks : 100

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 9

MTT-002

# बंगला-हिन्दी अनुवाद कार्यक्रम में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र संत्रांत परीक्षा जन-2022

## **MTT-002: बांग्ला—हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन**

**नोट :** सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित में से दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300—300 शब्दों में दीजिए:  $2 \times 10 = 20$

(a) हिंदी और बांग्ला मुहावरों की प्रकृति को तुलनात्मक रूप से समझाते हुए उनकी अर्थ व्यंजना पर सोदाहण प्रकाश डालिए।

- (b) बांगला और हिंदी के बीच अनुवाद की परंपरा को उदाहरण सहित समझाइए।
- (c) शब्दों के स्तर पर बांगला तथा हिंदी में समानता और असमानता पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।
- (d) बांगला और हिंदी के पदबंधों की बनावट को समझाते हुए उनका तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए।
2. निम्नलिखित बांगला शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए: 5
- (a) बासन (b) जनजम (c) निदान (d) अवदान (e) नाना  
 (f) आसन (g) विवर्जन (h) वार्ड (i) वालि (j) निर्भात
3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के बांगला पर्याय लिखिए: 5
- (a) साहस (b) सुविधा (c) डर (d) दुविधा (e) गृहस्थी  
 (f) चाची (g) अपने लोग (h) शिकायत (i) बीच में (j) बात
4. निम्नलिखित हिंदी मुहावरों में से किन्हीं पाँच के बांगला समतुल्य बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 5x3=15
- (a) मिट्टी में मिला देना  
 (b) खून – पसीना एक करना  
 (c) बिजली गिरना  
 (d) जैसी करनी वैसी भरनी  
 (e) शर्म से लाल होना  
 (f) कान का कच्चा  
 (g) उभरता हुआ तारा  
 (h) एक हाथ से ताली नहीं बजती  
 (i) एक पथ दो काज  
 (j) फूला न समाना

- (k) अपने पाँ पर कुल्हाड़ी मारना
5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद  
कीजिए:  $3 \times 15 = 45$

(a) मनेन पात्रे तृष्णि आर विजयगर्ब तथन उच्चले उर्थेहे  
महाश्वेतार, ताइ एसब तुच्छ थोँचा गाये माथलो ना।  
हासि हासि मूथे बल्लो, 'बलि माथार ओपर भागवान  
आचेन तो गा! दिनके रात बले कतकाल चालानो  
याय? एकदिन ना एकदिन भागवान चोथे आঙुल दिये  
देखिये देवेन ना? .... चिरकाल मोटा मोटा टाका  
एने ओइ दूइ राजारानीर श्रीपादपग्ये ढेलेहेन, यत किछु  
उपर्याजन गोदापदे समप्लन। की ना आमार भाइ-भाज  
थूब भाल। लक्षण भाइ! ओ-इ सवाइके देखेव। .... ता  
एवार चोथटो एकटू खूल तो? मानुषटा बैँचे थाकतेहे  
एই, चोथ बुखले की मृति धरवे ता बुध्दे ना एवार?  
हड्डे हड्डेहे बुध्दे। तवे प्रै, भाङे तो मचकाय ना।  
तेमन वाड्डेर वाँश नय केउ। ओरा मरे तबू मर्यादा  
हाराय ना। सब सब, बुखलेओ सब समान। छेलेण्ठलो  
पर्यन्त द्याखो ना लेखापड़ा करे ना किछु ना, कथा  
कहिते याओ दिकि, मूथे तुवडि घूटिये देवे एकेवारे।  
कत एम-ए लोक थ हये याय ओदेर मूथेर सामने!'

एवार श्यामार धैर्यचूति घटल। बाँटिथाना देओयालेर थाँजे  
उपुडु करे रेखे पातारइ एकटा फालि बार करे निये  
बाँटार काटिण्ठलो बाँधते बाँधते बल्लेन, 'तुमि  
देओयालेर सामने बसे बक्किमे करो मा, आमि उर्थलूम,  
आमार काज आছे!'

'रोस रोस। आमार आसल काजटाइ ये बाकी गो।  
बाबा, तुमि ये एकेवारे सर्वर्क्षन घोड़ाय जीन कमे  
आओ देखते पाइ! ... तवे काजेर कथाइ सेरे निह।

অ বৌদি, তুই একটু ওধারে যা ভাই, মার্ সঙে দুটো  
পেরাইভেট কথা আছে।'

তারপর গলাটা নামিয়ে ও ঘর থেকে কনকের শুনতে  
কোন রকম বাধা না হয় এমন পর্দাতেই ফ্যাস ফ্যাস  
করে বললে, 'দুশোটা টাকা দিতে হবে আমাকে এখুনি  
জামাইয়ের দরকার।'

- (b) সেদিন অফিস থেকে বেরোতেই দেরি হয়ে গিয়েছিলো  
হেমের। সিম্পালেয় বড় মাসিমার বাড়ি এসে যখন পৌঁছালো  
তখন সন্ধ্যা পেরিয়ে গেছে। বাড়িতে বিশেষ কেউ নেই.  
বড়ো মাসিমা গেছেন পাড়াতে কোথায় চন্দীর গান  
শুনতে। এ একটা যেন নেশা হয়েছে তাঁর রোজ যাওয়া  
চাই। গোবিন্দ তখনও বাড়ি আসে নি। ন'টার আগে  
কোন দিনই আস্তে পারে না সে, শনিবার ছাড়া। তাও  
শনিবারও ফিরতে ছটা সাড়ে ছটা বেজে যায়। ইঞ্জুল  
সিজন-এ অর্ধাং শীতকালে কাজের চাপ যখন পড়ে  
তখন ন টাতেও আসতে পারে না। সাধারণ ছাপাখানা  
নয় মালচিত্র ভূচিত্রাবলি চাপা হয় সেখানে। দায়িত্ববর  
কাজ, ঝুঁকি অনেক। ছাপাখানার ছুটি না হওয়া পর্যন্ত  
থাকতে হয়। কারণ মালিক ছটা বাজলেই বাড়ি চলে  
যায় সে ছাড়া ছাপার খুঁটিলাটি গোবিন্দের মতো আর  
কেউ বোঝে না। সাধারণত সাড়ে আটটা অবধি খোলা  
থাকে প্রেস সব বন্ধ করে ফিরতে ন'টা তো বটেই,  
দেরিও হয়ে যায়।

সেই সময়টা রানিবৌয়ের নিরঙুশ অবসর। সে সন্ধ্যার  
আগেই বিকালের রাঙ্গা সেরে নেয়। কারণ মেয়ে  
আগলানো এক হঙ্গামা। সে কাজটা ওর শাশুড়ী থাকলে  
করতে পারেন। কোনোদিন হয়ত তিনিই রাঙ্গা করেন, ও  
মেয়ে আগলায় আর ঘরের খুঁটিলাটি কাজ সারে।

ରାନ୍ଧା ମେରେ ଚଲ ବେଂଧେ ଗା ଧୁୟେ ଏଲେ ଓର ଶାଣ୍ଡି କାପଡ଼-  
ଚୋପଡ଼ କେତେ ଆହିକ ମେରେ ବେରିଯେ ଯାନ। କୋନଇ କାଜ  
ଥାକେ ନା ହାତେ। କେଉ ନା ଏଲେ ଏକଟୁ ବଈ-ଟଇ ପଡ଼େ।  
ପାଡ଼ାର ଲାଇରେରି ଥେକେ ହେମଇ ଏଲେ ଦେଯ ବହା ହେମ ଏଲେ  
ବହି ପଡ଼ା ହୟ ନା, ଗଲ୍ଲାଇ କରେ ବମେ ବମେ। ଅବଶ୍ୟ ଗଲ୍ଲଟା  
ଏତରଫାଇ ଚଲେ ବେଶି। ହେମ ବେଶି କଥା କହିତେ ପାରେ ନା,  
ବିଶେଷ କରେ ବଡ଼ବୌଦିର ସାମଳେ ଏଲେ ଯେଳ ତାର ସମସ୍ତ  
କଥା ଫୁରିଯେ ଯାଯା। ଶୁଦ୍ଧ ଚୁପ କରେ ମୁସ୍କ ଦୃଷ୍ଟିତେ ଚେଯେ ବମେ  
ଥାକେ। କଥା କହିତେ ଇଙ୍ଗାଇ କରେ ନା ତାର-ମଳେ ହୟ ସେ  
ମମଯଟା ବୌଦିର କଥା ଶୁଳ୍କେ କାଜ ହବେ।

ଆଜଓ ତାଇ ଶୁନ୍ଛିଲ ମୋ ଶୁମ୍ଭ ମେଯେକେ ଏକଟା ପାଥା  
ଦିଯେ ବାତାସ କରନ୍ତେ କରନ୍ତେ କଥା ବଲଛିଲୋ ବଡ ବୌ,  
ଆର ହେମ ସମସ୍ତ ଇନ୍ଦ୍ରିୟକେ ଚଞ୍ଚୁ ଓ କର୍ଣ୍ଣ ଘନୀଭୂତ କରେ  
ବମେ ଶୁନ୍ଛିଲ ଏବଂ ଦେଖିଲି। ଶିଙ୍ଗିରଇ ଆବାର ଛେଲେପୁଲେ  
ହୟେ, ସାଧ ହୟେ ଗେହେ-ଏଥନ -ତଥନ ଅବଶ୍ୟ। ତବୁ କୀ  
ଦେହେର ବାଁଧୁନି, ବୋବାଇ ଯାଯ ନା ଯେ ଏତ ଭାନୀ ହୟେ  
ଏମେହେ ଦେହ ଦାଁଡ଼ାଲେ ତବୁ ଯଦି-ବା ବୋବା ଯାଯ ବମେ  
ଥାକଲେ ଏକେବାରେ ଟେର ପାଓୟା ଯାଯ ନା। ଏନ୍ଦିକ ଦିଯେଓ  
ରାନିବୌଦିର ବରାତ ଭାଲ। ପର ପର ହୟେ ଲ୍ୟାଙ୍ଗାରି ହୟେ  
ପଡ଼େ ନି। ବଡ଼ଟି ବୋଧ ହୟ ବଚର ଚାର-ପାଁଚେର ହଲ ମନେ  
ମନେ ହିସେବେ କରେ ହେମ। ଯାର ଭାଲ ହୟ, ତାର ସବ ଭାଲ।

- (c) ହରିନାଥକେ ଅନେକଦିନ ବାଁଚିଯେ ରେଖେଛିଲ ପ୍ରିନ୍ଟିଲା।  
ଡାକ୍ତାରେର ମୋତେ ତାର ଯେ କଦିନେର ମେୟାଦ, ତାର ଚେଯେ  
ଟେର ବେଶି ଦିନ। ଉମାର ଦେଖେ ଆସାର ପରା ପ୍ରାୟ ଦେଡ  
ମାସ ବେଁଚେ ଛିଲ।

କିନ୍ତୁ ମେଜଳ୍ୟ ମୂଲ୍ୟଓ ବଡ କମ ଦିତେ ହୟ ନି।

ଉମାର କଥାମତ ସାହେବ-ଡାକ୍ତାରଇ ଡେକେଛିଲ। ଉମାର  
କଥାମତ ଅର୍ଥାତ୍ ଉମାର ପରାମର୍ଶେ। କିନ୍ତୁ ପରାମର୍ଶ କଥାଟା  
ନିତାନ୍ତରେ ଶୋଭନତାର ଥାତିରେ ବ୍ୟବହାର କରା ଚଲତେ ପାରେ।

ପ୍ରିନ୍ଦିଲା ଆଗେଇ ମନ ସ୍ଥିର କରେଛିଲ। ଉମାର ଯଥନ ମତ ଚାହିଲେ ତଥନ ଉମା ଆର 'ନା' ବଲତେ ପାରେ ନି। ଜାଣେ ଅନୟଥକ, ଜାଣେ ମେ ଶୁଧୁ ତାତେ ଓର ଇହକାଳେର ସମ୍ବଲଟୁକୁ ନିଃଶେଷ ହୟେ ଯାବେ ଫଳ କିଛୁ ହବେ ନା। ତବୁଓ ପାରେ ନି। ମେ ହରିନାଥେର ମା-ଓ ନୟ, ଶାଶ୍ଵତିଓ ନୟ। ଟାକାଟା ବ୍ୟାବହାରିକ ମୂଳ୍ୟ ତାର ଅତ ଜାଣା ନେଇ। ତାର କାହେ ମେଯର ଅନ୍ତରେର କଥାଟାଇ ବଡ଼। ଜାମାଇ ଯଦି ଦୂଟୋ ଦିନଓ ବେଶ ବାଁଢ଼େ ମେଯର କାହେ ସେଇଟେଇ ଲାଭ। ମେଇ ଜନ୍ୟଇ ତାକେ ପ୍ରତ୍ୟାସଙ୍ଗ ସର୍ବନାୟତର ଦିକେ ଚେଖ ବୁଝେ ଦୀଘନିଶ୍ଵାସ ଚେପେ ବଲତେ ହୟେଛିଲ, 'ଡାକତେ ହୟ ତୋ ଏଥନେଇ ଡାକ, ଦେଇ କରେ ଲାଭ ନେଇ।'

କିନ୍ତୁ ମେ ଏକରାଶ ଟାକାର ଦରକାର।

ଅତ ଟାକା ପ୍ରିନ୍ଦିଲାର କଲ୍ପନାର ବାହିରେ। ତାର ଗହନା ପ୍ରାୟ ମରି ଚଲେ ଗେଛେ ଅଫିସ ଥେକେ ଯତ୍ତା ପାଓଯା ସମ୍ଭବ, ତା ପେଯେଛିଲ ମେ-ଓ ମର ଶେଷ।

'ଟାକା? ଟାକା କଥା ଥେକେ ଆସବେ?'

ଫ୍ରିଣକର୍ତ୍ତେ ପ୍ରମ୍ପ କରେଛିଲ ହରିନାଥ।

'ମର ତୋ ଶେଷ କରଲେ କେଳ ଏ କାଜ କରିଛୋ।' ଆବାରଓ ବଲେଛିଲ ମେ।

'ତୁମି ଚୁପ କର। ...ଆମାର ଭାବନା ଆମିଇ ଭାବବ। ତୋମାର ଅତେ ମର ତାହିତେ କଥା କେଳ ବଲ ତୋ!'

ଏହି ବଲେ ମେ ଜୋର କ'ରେ ଓର ଚୋଥେର ପାତା ବୁଝିଯେ ରେଖେ ଚଲେ ଏମେହିଲା।

ଏମେହିଲ ସଟାନ ଶାଶ୍ଵତିର କାହେ।

କଲକାତାଯ ମାସି ଆର ଦିନିମାର କାହ ଥେକେ ଅନେକ କୋଥାଯ ଶୁଣେଛେ ମେ, ଅନେକ କଥା ଶିଖେଛେ। ମୋଟାମୁଠି

ঝাপসা ঝাপসা ভাবে বিষয়-সম্পত্তির মোটা কথাগুলো  
জানে।

শাশুড়ির কাছে এসে বলেছিলো, 'মা, এ বিষয়ে ওরও তো  
ভাগ আছে। সেই ভাগটা বিক্রি করবো। আপনি ব্যবস্থা  
ক'রে দিন।'

- (d) কখনো কখনো জীবনে এমন একটা দুর্বিষহ মুহূর্ত আসে,  
যখন মনে হয় বাঁচার চাইতে মরাটা বুঝি অনেক সহজ  
এই বোধটা সাধারণত জঙ্গ নেয় নিঃসীম একটা হতাশার  
মধ্যে থেকে। অথচ কোনো শহীদ যখন মৃত্যুর মুখোমুখি  
দাঁড়ায়, দুঃসহ যন্ত্রণার মধ্যেও অনুভব করে চিরন্তন  
একটা গৌরবের জঙ্গলয়।

ঠিক তেমনিভাবে টমও যখন তার জল্লাদের সামনে বুক  
টানটান করে দাঁড়িয়ে ছিল, স্পষ্টই অনুভব করতে  
পারছিলো তার অত্যিমলয় ঘনিয়ে এসেছে, দুঃসাহসী একটা  
গৌরবে তার বুকটা ফুলে উর্ঠেছিল, মনে হয়েছিলো  
কর্ণণাধন যিশুর উজ্জ্বল মুখখালা স্মরণ করতে করতে  
সে যেকোনো অত্যচার আর আঘাত সহ্য করতে পারবে।  
কিন্তু জল্লাদের ছায়াটা দূরে মিলিয়ে যেতে না যেতেই  
টমের সেই আবেগ বিহুল মুহূর্তটাও কেমন যেন স্থিমিত  
হয়ে গেল, ফিনে এলো দুর্বিষহ যন্ত্রণা আর ক্লান্তি।  
অর্ধচেতন, নিঃসঙ্গ একটা হতাশার মধ্যে সে ধীরে ধীরে  
তলিয়ে যেতে লাগল।

ক্ষতস্থান শুকিয়ে আস্তে না আসতেই লেঁগি সাকে নিয়মিত  
তুলা সোলার কাজে লাগিয়ে দিলো দিনের পর দিন  
পরিগ্রাম আর ক্লান্তি ছাড়াও বিদ্রোহ ভরা নীচমনা ইতরটা  
যত্নরকম অন্যায় আর অশুভ ইচ্ছা টমকে কেবলই  
উত্ত্যক্ত করে তুলতো, তেওঁ দিতো তার ধৈর্যের বাঁধ।  
চারপাশে হীন রুক্ষতার মাঝে বাইবেলটাই ছিল তার  
একমাত্র সান্ত্বনা। আগে অবসর সময়ে যাওবা আগন্তের

সামনে বসে একটু আধটু পড়তে পারতো সেরে ওঠার পর  
তাও পারে না। অবসর কোথায়? ভুলো ভোলার এই  
মরশ্বমে লেগি কাটকে একটা মুহূর্তও ফুরসৎ দেয় না।  
ওদের জীবনে রবিবার বা ছুটি বলে কিছু নেই। এখন  
সারাটা দিন অমানুষিক পরিশ্রম আর নিষ্ঠুর আচরণ সহ  
করার পর যখন কাজ থেকে ফিরে আসে, নিজেকে মনে  
হয় যেন একেবারে নিঃশ্বেষ হয়ে গেছে। একটু পড়ার চেষ্টা  
করলেই চোখ দুটো ঝাপসা হয়ে আসে, মাথাটা বিমর্শিম  
করে, ইচ্ছে করে অন্যদের মতো নিজের দেহটাকেও  
একেবারে টানটান করে মেলে দিতে।

- (e) পশুপতি জ্যাঠাবাবুর কথাটা বলে নিই। সেই সময় উনি  
আমাদের সংসারে কয়েকটা দিন বয়ে গিয়েছিলেন একটা  
ভরসার বাতাসের মতো।

"প্রণব আছে, প্রণব আছে?" বলতে বলতে একদিন  
সকালে পড়েছিলেন আমাদের ঘরে চুকে, তখনকার দিনে  
টোকাটুকি দিয়ে ঢোকার ব্যাপার-স্যাপার ছিলই না।  
বাবাকে দেখতে পেয়ে "আরে এই তো প্রণব" বলে  
থমকে দাঁড়িয়েছিলেন, বলেছিলেন, "কিন্তু বিছানায়  
কেন!" তুমি শশব্যস্ত, মাথায় ঘোমটা তুলে এক পশে,  
আগস্তক ওই লোকটি, যাঁর চেহারা দশাসই, কাঁধ চওড়া,  
গায়ে মোটা ফতুয়া, অনেকটা বাবাকে আগে যেমন  
দেখাত, প্রশংস কপাল, চোখ উজ্জ্বল, তোমার দিকে  
তাকিয়ে বললেন, "তুমি আমাকে চিনবে না বউমা!  
আগে দেখনি। আমি পশুপতি। প্রণব কোনওদিন আমার  
কথা তোমাদের বলেনি?"

বাবার তখন কথা বলতে কষ্ট হত, কিন্তু এক ধরণের  
সম্পূর্ণ তখন ছিল, দেখলাম ওঁর শীর্ণ-ক্লিষ্ট মুখ আকস্মিক  
একটা আলোকে ভরে গেছে। পশুপতি বললেন, "আমি  
ওর দাদা হই।"

বাবা জড়িয়ে জড়িয়ে কোনওমতে বললেন, "দাদার  
বেশি।"

পশ্চিমতি যথা বললেন, "সম্পর্ক হিসেবে করলে, খুব  
দূরের যদিও, এক রকম নেই-ই। তবু আমরা অনেকের  
চেয়েই আপন, কাছাকাছি। সুখ-দুঃখে বহুদিন একসঙ্গে  
কাটিয়েছি।"

তুমি তখন তাঁকে প্রগাম করলে। কোমর দেখাদেখি  
আমিও। পশ্চিমতি নিঃসংকোচে বসলেন বাবার বিষানার  
এক ধারে। বললেন, "ওর এই অবস্থা তা-তো জানি না।  
আমি তো অনেক আশা নিয়ে এসেছিলাম, গত মাসে  
আমরা সবাই ছাড়া পাই, জানো তো? আমি সঙ্গে-সঙ্গে  
চলে যাই রাঁচিতে, গ্রীষ্মবাসে শরীর তো একেবারে ভেঙে  
পড়ে? প্রণব সে-সব নিজেই তো জানে। রাঁচিতে  
আমাদের গ্রন্থের আরও কয়েকজন এলো, আন্দামান-  
ফ্রেরত, পুরোনো দু'জন বন্ধুও দেখি জুটে গেলো। সেখানে  
দিলের পর দিল ধরে অনেক পরামর্শ। প্রণব", বাবার  
দিকে স্থির চোখে চেয়ে পশ্চিমতি বললেন, "একটা প্ল্যান  
পাকা করেই এখানে এসেছি।"